आज के भारत की ज्वलंत समस्याएं–22 : सवर्ण आरक्षण

सवर्ण और विभागवार आरक्षण

वर्ग संघर्ष के इतिहास में बहुजनों पर सबसे बड़ा हमला

संपादक

एच.एल. दुसाध

डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी

प्रस्तावना

महेंद्र नारायण सिंह यादव

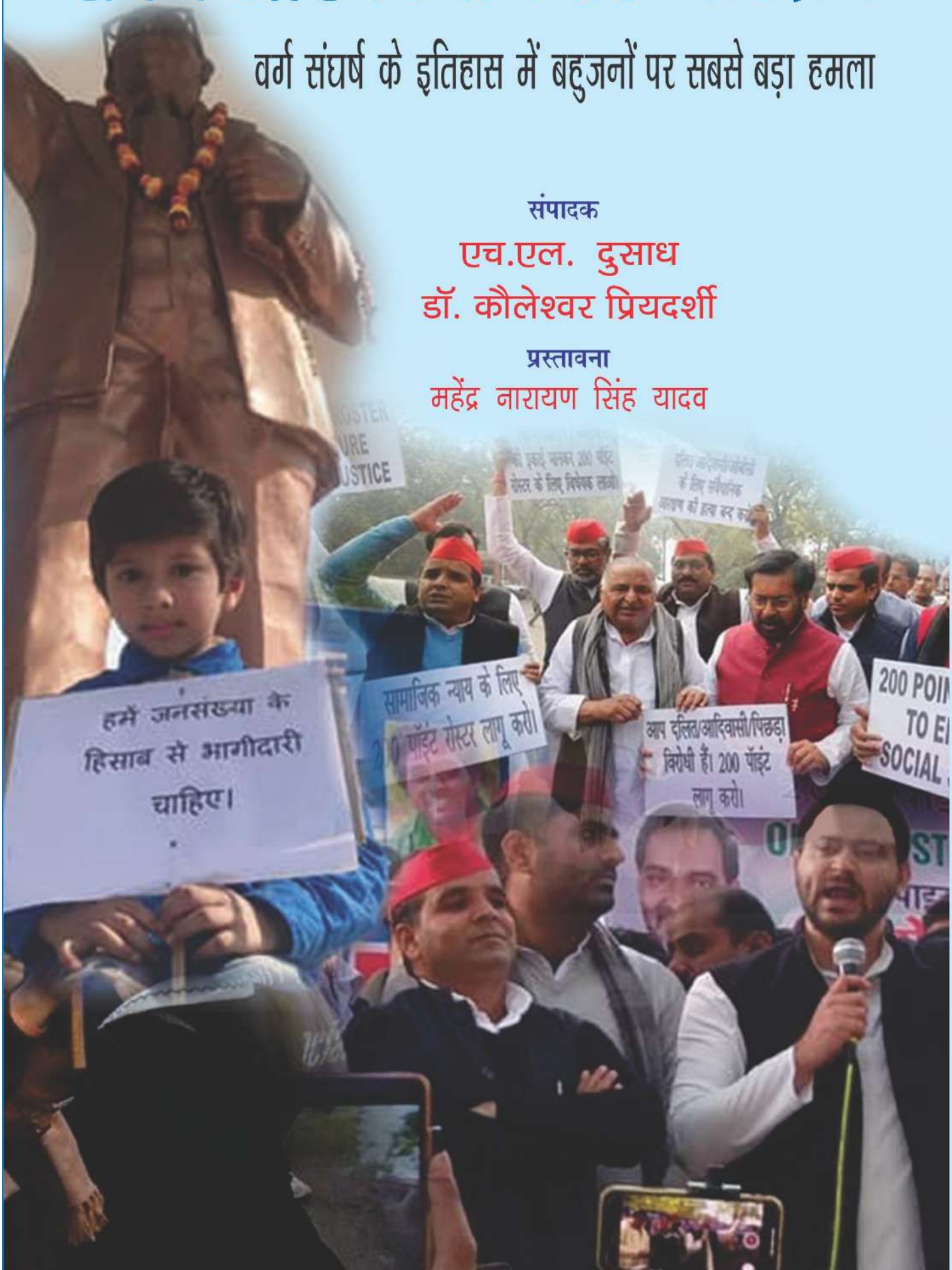

सवर्ण और विभागवार आरक्षण

नई सदी के वर्ग संघर्ष के इतिहास में बहुजनों पर सबसे बड़ा हमला!

संपादक

एच. एल. दुसाध

डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी

दुसाध प्रकाशन

लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN : 978-81-87618-81-2

प्रकाशक : **दुसाध प्रकाशन**
डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467,
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191

प्रशासनिक कार्यालय
B-1,149/9 किशन गढ़, वसंत कुंज
नई दिल्ली-110070, सम्पर्क : 011-26125973

© **प्रकाशक**

मूल्य : ₹ 250.00 (अजिल्द)
₹ 600.00 (सजिल्द)

रचना : **सवर्ण और विभागवार आरक्षण**
संपादक : एच. एल. दुसाध - डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी
आवरण : क्वालिटी
शब्दांकन : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-94

समर्पण

सामाजिक न्याय की दुनिया के
दो सबसे चमकदार सितारे
तेजस्वी और धमेन्द्र यादव को

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN : 978-81-87618-81-2

प्रकाशक : **दुसाध प्रकाशन**
डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467,
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191

प्रशासनिक कार्यालय
B-1,149/9 किशन गढ़, वसंत कुंज
नई दिल्ली-110070, सम्पर्क : 011-26125973

© **प्रकाशक**

मूल्य : ₹ 600.00 (सजिल्द)

रचना : **सवर्ण और विभागवार आरक्षण**
संपादक : एच. एल. दुसाध - डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी
आवरण : क्वालिटी
शब्दांकन : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-94

अनुक्रम

प्रस्तावना —*महेन्द्र नारायण सिंह यादव* 9

शुभकामना संदेश —*डॉ. सी.पी. आर्य* 15

संपादकीय —*एच.एल. दुसाध* 19

अध्याय-1 : सवर्ण और विभागवार आरक्षण : फेसबुक पर त्वरित प्रतिक्रियाएँ

सवर्ण आरक्षण पर लोगों की राय 27

***अध्याय-1ए* :** विभागवार आरक्षण 40

***अध्याय-1बी* :** 200 प्वाइंट रोस्टर के लिए अध्यादेश : 7 मार्च, 2019 47

अध्याय-2 : नई सदी के वर्ग संघर्ष के इतिहास में बहुजनों पर सबसे बड़ा हमला

सवर्ण आरक्षण : भारत के वर्ग संघर्ष के इतिहास में एक नया अध्याय!

—*एच.एल. दुसाध* 55

संविधान के साथ बलात्कार—55, मार्क्स का वर्ग संघर्ष!—56, वर्ण-व्यवस्था के दो वर्ग—56, मंडलवादी आरक्षण के क्षति की भरपाई!—57, सवर्ण आरक्षण के लिए प्रयासरत : कांग्रेस और भाजपा—58, वर्ग संघर्ष में क्यों हारे बहुजनवादी दल!—59

यह त्रिमूर्ति घटित कर सकती है : लोकतांत्रिक क्रांति! —*एच.एल. दुसाध* 59

8-14 जनवरी, 2019 : सर्वाधिक घटनाबहुल दिन!—59, निकट आये बहुजनवादी दल : पूरा हुआ दो दशक पुराना सपना—60, तैयार हैं लोकतांत्रिक क्रांति के हालात—61, तुंग पर है सापेक्ष वंचना का अहसास—61, क्रांति के लिए तैयार हैं : लाखों बहुजन लेखक-पत्रकार!—62, क्रांति के लिए दूर हुई : योग्य नेतृत्व की कमी—63

हिन्दू आरक्षण के सुविधाभोगियों को भी आरक्षण! —*एच.एल. दुसाध* 64

गुजरात से यूपी तक लागू हुआ : सवर्ण आरक्षण—64, आरक्षण का देश : भारत!—65 हिन्दू आरक्षण में सवर्णों की स्थिति!—66, हिन्दू आरक्षण का दुष्परिणाम!—66, सवर्ण : विदेशागत शासकों के पार्टनर!—67, आधुनिक आरक्षण की विचार प्रणाली के जनक : ज्योतिबा फुले—67, मंडलवादी आरक्षण के खिलाफ शासक दलों की साजिश!—68, सवर्ण आरक्षण : मोदी की राजनीतिक इच्छाशक्ति का कमाल!—69, सवर्णों जैसा वर्चस्व और कहाँ!—70

क्या सवर्ण भी आरक्षण के पात्र हो सकते हैं! —*एच.एल. दुसाध* 71

आरक्षण का आधार निर्धनता नहीं : वाजपेयी—71, आरक्षण का देश : भारत!—71, हिन्दू आरक्षण में सब कुछ सवर्णों के लिए—72, मंडलवादी आरक्षण की घोषणा के बाद दो मोर्चों पर सक्रिय : सवर्णवादी दल—73, आजादी के 70 सालों बाद : सवर्ण ही देश के मालिक!—73

विभागवार आरक्षण : वर्ग संघर्ष के इतिहास में वंचितों वर्गो पर एक और प्रहार! *—एच.एल. दुसाध* 75

सवर्ण आरक्षण के बाद अब विभागवार आरक्षण!—75, सारा कुछ वर्ग संघर्ष से प्रेरित—76, नरसिंह राव का हिडेन एजेंडा—77, बहुजनों को बर्बाद करने में क्यों सबसे आगे निकले : मोदी!—78

बहुजनों में पैदा हो : एजुकेशन डाइवर्सिटी के लिए आक्रोश! *—एच.एल. दुसाध* 79

ऐतिहासिक आक्रोश मार्च!—79, लड़नी होगी दो मोर्चों पर लड़ाई!—81, 200 प्वाइंट रोस्टर की सीमायें!—82, कल्पना नहीं है एजुकेशन डाइवर्सिटी का विचार—82

जिसकी जितनी संख्या भारी : बदल सकती है राजनीतिक परिदृश्य! *—एच.एल. दुसाध* 84

चुनाव में नारों का महत्व!—84, बदले हालात में जिसकी जितनी संख्या भारी ने तोड़ा : दलगत सीमायें!—86, चर्चित चुनावी नारे—86, जिसकी जितनी संख्या भारी का प्रभाव सार्वदेशिक है—87, अवसरों के पुनर्वितरण से उभरी : संख्यानुपात में भागीदारी की चाह—88

मोदी : नयी सदी के सबसे बड़े सवर्ण हृदय-सम्राट! *—एच.एल. दुसाध* 89

मोदी क्या सचमुच विफल प्रधानमंत्री हैं!—89, मंडल के बाद बहुजनों के खिलाफ लामबंद हुआ : भारत का सुविधाभोगी वर्ग—89, नरसिंह राव की बुनियाद पर सवर्ण वर्चस्व का महल खड़ा किये : नरेन्द्र मोदी—90, मोदी ने पूरा किया : आरक्षण को कागजों की शोभा बनाने का काम—91, मोदी : सबसे बड़े सवर्णपरस्त शासक—91, स्लॉग ओवर में मोदी के दो छक्के!—92, मोदी : नई सदी के सवर्ण हृदय सम्राट!—93

जिसकी जितनी संख्या भारी-उसकी उतनी भागीदारी *—एच.एल. दुसाध* 93

सवर्ण आरक्षण के जवाब में उभरा : जिसकी जितनी संख्या भारी का नारा!—94, बसपा का पेटेंट नारा बना : सबका नारा!—95, गरीबी हटाओ बनाम इंदिरा हटाओ!—96, जब तक सूरज चाँद रहेगा-इंदिरा तेरा नाम रहेगा!—97, मिले मुलायम कांशीराम...—97, विश्व इतिहास का सर्वोत्तम नारा!—98, जिसकी जितनी संख्या भारी का नारा : क्यों लोकसभा चुनाव-2019 में घटित कर सकता है चमत्कार!—99, संपदा-संसाधनों का इतना असमान बंटवारा और कहां!—100, वर्तमान हालात में यदि सामाजिक न्यायवादी दल प्रत्येक क्षेत्र में जिसकी जितनी संख्या भारी की घोषणा कर दें तो...—102

सामाजिक न्याय की अनदेखी के लिए क्यों अभिशप्त है : मुख्यधारा की मीडिया! *—एच.एल. दुसाध* 103

मुख्यधारा की मीडिया का वर्गीय चरित्र अटूट!—103, मीडिया में विलुप्त : ऐतिहासिक आक्रोश!—104, हिन्दी पत्रकारिता का इस्तेमाल, मनुष्य के भीतर

घृणा, हिंसा और बर्बरता फैलाने के लिए हो रहा है।—105, हिन्दी पत्रकारिता पर सवर्णों का कब्जा—106

बहुजनवादी दल अनुप्रिया जैसी प्रतिभाओं को सवर्णवादी दलों से जुड़ने से रोक लें! *—एच.एल. दुसाध* 107

संख्यानुपात में आरक्षण का मुद्दा म्लान कर सकता है : राष्ट्रवादी लहर! *—एच.एल. दुसाध* 112

आम चुनाव के पहले : पुलवामा हमला!—112, मोदी ने पेश किया : शहादत के अपमान का दुर्लभ मिसाल—113, सैंडविच बन जायेंगे : बहुजनवादी दल—114, संख्यानुपात में सर्वव्यापी आरक्षण की लड़ाई : कर सकती है राष्ट्रवादी लहर को म्लान—115

मूलनिवासियों की गुलामी से मुक्ति के लिए जरूरी है : चप्पे-चप्पे पर संख्यानुपात में आरक्षण की लड़ाई *—एच.एल. दुसाध* 116

मानव जाति का इतिहास : वर्ग-संघर्ष का इतिहास!—117, आरक्षण में क्रियाशील : भारत में वर्ग संघर्ष!—117, मंडल उत्तर काल में वर्ग-संघर्ष का अभीष्ट!—119, मोदी-राज के स्लॉग ओवर के दो छक्के : सवर्ण और विभागवार-आरक्षण!—119, इन्हीं हालातों में दुनिया के तमाम देशों में संगठित हुए स्वाधीनता संग्राम :—121, सर्वव्यापी आरक्षण के जोर से ही भारतीय शासकों के खिलाफ लड़ी जा सकती है : गुलामी से मुक्ति की लड़ाई!—122, गुलामी से मुक्ति और वर्ग संघर्ष में हारी बाजी पलटने के लिए : बहुजन डाइवर्सिटी मिशन का दस सूत्रीय अजेंडा!—123, संख्यानुपात में आरक्षण के साथ लड़नी होगी : अवसरों और संसाधनों पर मूलनिवासियों का पहला हक की लड़ाई—124

नौकरियों में आरक्षण की सीमाबद्धता को समझें! *—एच.एल. दुसाध* 125

सवर्ण आरक्षण से पनपा : संख्यानुपात में आरक्षण का जज्बा!—125, विभागवार आरक्षण : मानव जाति के इतिहास के सबसे बेरहम फैसलों में से एक!—127, कितना सीमित है : आर-पार की लड़ाई का मुद्दा!—127, डॉ. आंबेडकर की 'राज्य और अल्पसंख्यक' के बाद बहुजनों को मुक्ति की सर्वोत्तम रचना : चंद्रभान प्रसाद का 'भोपाल दस्तावेज और घोषणापत्र'!—128, आरक्षण की सीमायें—129, कितना कारगर निजी क्षेत्र में आरक्षण!—130, विश्व परिदृश्य—131, रंग ला रहा है विद्या गौतम का देश की हर ईंट में भागीदारी का आन्दोलन!—131

बहुजनों का मॉडल देश : रूस-चीन नहीं, दक्षिण अफ्रीका! *—एच.एल. दुसाध* 133

बहुजनों का मॉडल देश?—133, भारत और दक्षिण अफ्रीका में कितनी समानता!—134, भेदभाव से मुक्त हुए दक्षिण अफ्रीकी मूलनिवासी—135, मूलनिवासी कालों को मिला सर्वव्यापी आरक्षण—135, तानाशाही सत्ता से भारत के मूलनिवासियों का कायम हो सकता है : सर्वत्र दबदबा—136, सामाजिक अन्याय की शिकार विश्व की विशालतम आबादी : बहुजन समाज—137, क्रांति में घी का काम करती : सापेक्षिक वंचना!—138, मंडलोत्तर काल में मूलनिवासियों

के खिलाफ शत्रु की भूमिका में अवतरितः सवर्ण समाज!—139, मोदी राज में शिखर पर पहुंची : सापेक्षिक वंचना—139

अध्याय-3 : 13 प्वांइट रोस्टर से उभरी चुनौतियाँ और समाधान

रोस्टर के बारे में जानिए उनसे, जो इसके बारे में सबसे ज्यादा जानते हैं
—प्रो. सुखदेव थोराट 145

जेएनयू और दिल्ली यूनिवर्सिटी में आरक्षण लागू करने का अनुभव—145, नियम ऐसे न हों कि आरक्षण के प्रावधान निष्प्रभावी हो जाएं—146, रोहित वेमुला एक्ट की मांग—147, शिक्षा के अवसर से वंचित रह जाएंगे एससी-एसटी—148

लेक्चरर-प्रोफेसर की नियुक्ति के लिए बने राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सेवा आयोग
—प्रीति सिंह 149

समझिए, उच्च शिक्षा में रोस्टर का खेल! यूँ ही नहीं सुलग रहा है गुस्सा!
—लक्ष्मण यादव 152

अवसरों और संसाधनों पर पहला हक वंचित वर्गों का! *—एच.एल. दुसाध* 155

एक नया विचार : रिवर्स 13 प्वाइंट रोस्टर!—156, रिवर्स रोस्टर के विचार को मिला व्यापक समर्थन—157, रिवर्स रोस्टर प्रणाली के चैम्पियन पैरोकार : सांसद धर्मेन्द्र यादव—158, संसाधनों पर पहला हक किसका!—161, अवसरों और संसाधनों पर पहला हक : सवर्णों या एसटी-एससी-ओबीसी का!—162, आजादी के 70 साल बाद : सवर्ण ही देश के मालिक—163, दुनिया की हर अदालत 13 प्वाइंट रोस्टर उलटने का समर्थन करेगी—164

13 प्वाइंट रोस्टर उलटना क्यों जरुरी है! *—एच.एल. दुसाध* 165

मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या : आर्थिक और सामाजिक विषमता!—165, आर्थिक और सामाजिक विषमता पर बाबा साहेब की चेतावनी!—165, विकास से वंचित : दलित आदिवासी—166, अवसरों के बंटवारे में सवर्णों को प्राथमिकता—167, मोदी की सवर्णपरस्त नीतियों का कमाल!—168, धनार्जन के स्रोतों के पुनर्वितरण की जरूरत—168, मोदीराज में विस्फोटक बिन्दु पर पहुँची आर्थिक असमानता—169

अध्याय-4 : साक्षात्कार

साक्षात्कार की प्रश्नावली—173, अवसरों और संसाधनों का पहला हक किनका और क्यों?—173, साक्षात्कार—173, कपिलेश्वर प्रसाद—173, डॉ. रमेश प्रेमी—177, के. नाथ—180, सुभाष गौतम—187, फागू लाल—189, राजवंशी जे. ए. अम्बेडकर—191, डॉ. अनिल कुमार—194, डॉ. जवाहर पासवान—198, बुद्ध शरण हंस—201, हीरालाल राजस्थानी—205, डॉ. केदार कुमार मंडल—207, विद्या गौतम—211, अलका जिलोया—213, बी.आर. विप्लवी—216, डॉ. पुष्पा संखवार—222, डॉ. विजय कुमार त्रिशरण—225

अध्याय-5 : सवर्ण और विभागवार आरक्षण के खिलाफ
बहुजनों के आक्रोश की झलकियाँ

प्रस्तावना

बहुसंख्यक समाज के हितों पर खुलेआम डकैती

–महेंद्र नारायण सिंह यादव

केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार भारी बहुमत से बनने के बाद जिस तरह की आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, वे तकरीबन सभी सच साबित हुई हैं। खासकर, कार्यकाल के अंत में भाजपा और आरएसएस ने जिस तरह के कदम उठाए, उससे साबित हो गया है कि उनके एजेंडे पर केवल सवर्ण हित ही रहते हैं, और वह इनके लिए एससी, एसटी और ओबीसी को हर तरह का नुकसान पहुंचाने का खतरा उठाने को तैयार रहती हैं। भाजपा-आरएसएस को अपना एजेंडा लागू करने में एक तरफ मीडिया का भी पूरा सहयोग मिला तो दूसरी ओर, उस न्यायपालिका के फैसलों से भी उसे पूरी मदद मिली, जिसके पास न्याय से वंचित आदमी अंतिम आश लगाता है। चिंता की बात यह है कि इन दोनों ही क्षेत्रों में एससी, एसटी और ओबीसी की भागीदारी नगण्य है।

एक तरफ विश्वविद्यालयों में 13 पॉइंट रोस्टर लगने से एससी, एससी और ओबीसी समुदाय की प्रतिभाओं के असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर बनने के चांस एकदम शून्य हो गए हैं, वहीं गरीब सवर्णों के हितों की चिंता के बहाने, उसी आर्थिक सीमा वाले सवर्णों को बिना किसी सर्वेक्षण या जातिगत जनगणना के, 10 प्रतिशत आरक्षण आनन-फानन में दे दिया गया, जिस सीमा पर ओबीसी आरक्षण में क्रीमी लेयर तय की गई है।

सवर्ण आरक्षण पर भाजपा सरकार की खतरनाक फुर्ती

सवर्ण आरक्षण लागू करने में सरकार ने जितनी तेजी दिखाई, उतनी ही सुस्ती वह 13 पॉइंट रोस्टर को लागू करने से रोकने में दिखा रही है। सवर्ण आरक्षण के प्रस्ताव

पर तो विपक्षी दलों-खासकर सामाजिक न्याय के पक्षधर दलों को तो सोचने-समझने का समय ही नहीं दिया गया और जब तक वे कुछ समझ पाते, तब तक वह विधेयक बनकर लागू ही हो हो चुका था। राष्ट्रपति ने भी तुरंत ही उसे मंजूरी देकर कानून का रूप दे दिया। समग्र समाज की भागीदारी से अछूते देश में इसे बहुसंख्यक समाज के हितों पर खुलेआम डाला गया डाका माना जा रहा है जिसमें वंचित तबकों के बचाव का कोई रास्ता नहीं दिख रहा है।

उत्तर भारत के सामाजिक न्याय के नेताओं ने तो इस मामले में लापरवाही और नासमझी दिखाई ही, दक्षिण भारत से भी इस मामले में कोई राहत नहीं मिली, जबकि माना जाता रहा है कि सामाजिक न्याय के मामले में दक्षिण भारत के प्रदेश काफी आगे हैं। दक्षिण भारत में तमिलनाडू से गैर भाजपाई और गैर कांग्रेसी सांसदों की संख्या काफी ज्यादा थी, लेकिन उसमें बड़ा हिस्सा एआईएडीएमके पार्टी का ही है, जो कि इस समय नेतृत्व और दिशा से पूरी तरह से वंचित है। एआईएडीएमके की कमान इस समय जिन हाथों में है, वे खुद अपना वजूद बचाने के लिए इस बार भाजपा के सहारे बैठे हैं। ऐसे में उनकी अनिर्णयता ने सवर्ण आरक्षण के विधेयक को आसानी से पारित हो जाने दिया, और एससी, एसटी और ओबीसी के हितों पर भारी कुठाराघात हो गया। ये ऐसी दीर्घकालीन लूट लगती है जिसका नुकसान एक तरह से हमेशा के लिए हो गया है। यह स्थिति तभी सुधर सकती है जब भविष्य की कोई सरकार इस मामले में अतिसक्रिय होकर इसे खारिज करे। ऐसी केवल उम्मीद की जा सकती है, क्योंकि किसी भी दल ने अब तक ऐसा इरादा तक जाहिर नहीं किया है। वास्तव में सामाजिक न्याय के पक्षधर माने जाने वाले दलों का नेतृत्व सवर्ण मतों के मोहजाल में इस कदर फंसा हुआ है कि उसे आभास ही नहीं हो रहा कि सवर्ण मत उनसे किस हद तक नफरत करते हैं। वे केवल उसी स्थिति में इनको वोट देते हैं जब उनके पास कोई अन्य विकल्प न हो, और इन दलों ने उन्हीं के वर्ग का प्रत्याशी खड़ा किया हो, और चुनावोपरांत सरकार बनने की स्थिति में उन्हें उसी तरह की भारी भागीदारी मिलने का आश्वासन दिया जाए, जिस तरह की भागीदारी कांग्रेस और भाजपा देती हैं।

13 पॉइंट रोस्टर के मसले पर सरकार का क्रूर रवैया

इसके बाद एससी, एसटी और ओबीसी को बड़ा झटका 13 पॉइंट रोस्टर के अदालत के फैसले से लगा, जिसमें सरकार ने बडी चालाकी से चुप्पी साधे रखी, और सवर्णों के हित में, और एससी, एसटी और ओबीसी के खिलाफ इस निर्णय को पलटने

की पहल नहीं की। जब विरोध ज्यादा होने लगा तो मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कह दिया कि इसके खिलाफ सरकार अध्यादेश लाएगी, लेकिन वह न अध्यादेश लाई और न ही विधेयक। ऐसा लगा कि सरकार ने पहले से ही तय कर लिया था कि इस मामले पर उसे इस कार्यकाल में कुछ करना ही नहीं है, और सवर्णों को पूरा संदेश देना है कि सरकार उनका ही ख्याल रखती है। बाद में, संसद के सत्र में कांग्रेस ने विरोध की केवल औपचारिकता की इसलिए लोकसभा में सदन की कार्रवाई आसानी से चलती रही और भाजपा सरकार को समझ में आ गया कि चुप्पी साधने से काम चल जाएगा। राज्यसभा में कुछ बवाल हुआ तो जावड़ेकर ने चालाकी भरा बयान दे दिया कि सरकार पहले पुनरीक्षण याचिका दायर करेगी और उसके बाद अगर अदालत ने 13 पॉइंट रोस्टर नहीं हटाया तब कहीं जाकर वह अध्यादेश या विधेयक लाएगी।

संसद में किए वादे को भूली भाजपा सरकार

संसद में सरकार की तरफ से मानव संसाधन विकास मंत्री का ये सबसे बड़ा झूठ था। बहुजन समाज को वैसे भी उनके इस बयान पर यकीन नहीं आया था क्योंकि उनकी पुरानी फितरत ही ऐसी रही है। इतना जरूर था कि शायद संसद में कही बात से वे न पलटें। हुआ भी वही जिसकी कि आशंका थी। अदालत में उन्हीं जजों के सामने जब पुनरीक्षण याचिका दायर की गई तो उन्होंने तुरंत ही उसे खारिज कर दिया। इसके बाद, बल्कि इसके पहले भी तमाम विश्वविद्यालयों ने अब तक जबरन खाली पड़े पदों के लिए धड़ाधड़ विज्ञापन देने शुरू कर दिए। इनकी कोशिश साफ दिख रही है कि अध्यादेश या विधेयक लाने से पहले ही आगामी 25-30 सालों के लिए सारी नियुक्तियां कर दी जाएं, और एससी-एसटी-ओबीसी को उसमें कोई हिस्सा न दिया जाए।

अन्य सरकारी विभागों में भी लगा दिया 13 पॉइंट रोस्टर

इतना ही नहीं, 13 पॉइंट रोस्टर को विश्वविद्यालयों तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि सरकार के सभी विभागों में इसे लागू करके, आरक्षण को पूरी तरह से निष्प्रभावी कर दिया गया है। ये सब देखते हुए भी मानव संसाधन विकास मंत्री और प्रधानमंत्री चुप हैं क्योंकि हो तो सब इन्हीं की मंशा के अनुरूप ही रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने संसद में हो रहे बवाल को थामने के लिए भले ही कह दिया था कि अदालत अगर 13 पॉइंट रोस्टर को खारिज नहीं करती है तो सरकार अध्यादेश या विधेयक लाएगी। अब अदालत अपना फैसला दे चुकी

है, लेकिन प्रकाश जावड़ेकर का कहीं कोई पता तक नहीं लग रहा है।

सामाजिक न्याय के पक्षधर दल बने रहे बेबस

सामाजिक न्याय के दल इस मामले में एकदम असहाय बने रह गए। छात्रों और प्राध्यापकों ने देशभर में विरोध-प्रदर्शन किए, गिरफ्तारियां दीं जिसका सिलसिला लगातार जारी है, लेकिन कांग्रेस तक को इसकी परवाह नहीं है, तो उससे सबसे ज्यादा फायदे में रहने वाली भाजपा की तो बात ही क्या करना है। अगर इसी तरह के आंदोलन सवर्ण छात्रों ने दो-एक जगह भी किए होते, तो देश भर में कोहराम मच जाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ जिसका कारण वही डाइवर्सिटी का अभाव है जो मीडिया में सबसे ज्यादा है, एक तरह से ये सामाजिक न्याय की पक्षधर ताकतों को संघ परिवार ने सीधी चुनौती दी है कि हम तुम्हारा वोट भी लेंगे और तुम्हारी ही हत्या करेंगे, तुम्हारी ही रोटी छीनेंगे, तुम्हारी ही जमीन और जंगल छीनेंगे, और तुम कुछ नहीं कर पाओगे।

10 लाख आदिवासियों का जंगलों से निष्कासन

इतना ही नहीं, सुप्रीम कोर्ट द्वारा 10 लाख से ज्यादा आदिवासियों को जंगलों से निकाल बाहर करने के फैसले पर भी सरकार ने बेरहमी से चुप्पी साधी गई है। इस बात का जवाब कोई नहीं दे रहा है कि ये आदिवासी अपनी जमीन और जंगल से दूर कहां जाएंगे। ऐसा समाज हम बना ही नहीं पाए हैं जिसमें ये आदिवासी सम्मान की जिंदगी जी सकें। एक तरह से उनको मरने के लिए छोड़ दिया गया है। जिस तरह से सुनियोजित तरीके से यह सब किया गया, उसको अब सामाजिक न्याय वाले काफी हद तक तो समझने लगे हैं, लेकिन बड़ी संख्या अब भी आरएसएस के उठाए नकली मुद्दों में उलझ जाती है, और यही आरएसएस की सबसे बड़ी ताकत है।

राष्ट्रवाद की आड़ में भटकाने की कोशिश

जब लगा कि ये बहुजन ताकतें धीरे-धीरे एकजुट होने लगी हैं, और चुनावों में बड़ा नुकसान कर सकती हैं, तो ठगों की अंतिम शरणस्थली 'राष्ट्रवाद' का सहारा ले लिया गया। कड़ी सुरक्षा के बीच पुलवामा में सीआरपीएफ के जवानों पर हमला कई तरह के सवालों के घेरे में है, लेकिन राष्ट्रवाद के शोर में उन सवालों को टाल दिया गया। ऐसा माहौल बनाया गया कि जवानों के मारे जाने पर देशभर में क्रोध का ज्वार पैदा हो जाए, यहां तक कि खुद सरकार पर कुछ न करने का आरोप

लगाया जाने लगे, इसके बाद जब लोहा गर्म हो जाए, तब मारे गए जवानों के परिजनों को उनके हाल पर छोड़, नियंत्रण रेखा के पार कार्रवाई करके वाहवाही लूट ली जाए। अब जब सीमा पर लड़ाई जैसी स्थिति हो, तब आंतरिक मुद्दे उठाने का जोखिम कौन ले सकेगा। खुद बहुजन समाज के लोग आत्मविश्वास से इतने हीन हैं कि उन्हें लगता है कि अब कुछ हो ही नहीं सकता, और हमें भी अपने को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए, और देशभक्ति प्रमाणित करने के लिए अपनी जिंदगी और भविष्य से जुड़े मुद्दों को किनारे रख देना चाहिए।

यही बात सोशल मीडिया में देखने को मिल रही है। तमाम मुद्दों पर धारदार तरीके से लिखने वाले मोदी को नहीं, तो सेना को बधाई देने में लगे हैं, और इसके पीछे की राजनीति को नहीं देख रहे हैं। यहां तक कि मारे गए जवानों के परिजनों की भी सुध कोई नहीं ले रहा है जबकि वह इसी कथित राष्ट्रवाद का ही अंग है।

हैरान कर देने वाला है आरएसएस का दुस्साहस

हालांकि, भाजपा और आरएसएस की इस तरह की बहुजन विरोधी कोशिशों का यह कोई पहला उदाहरण नहीं है। वह तो हमेशा से ही किसी न किसी प्रकार से सारे संसाधनों पर केवल ब्राह्मणों, या कुछ हद तक अन्य सवर्णों के कब्जे के लिए प्रयासरत रहे ही हैं, लेकिन यह बात जरूर चौंकाने वाली है कि एससी, एसटी और ओबीसी के हितों पर सबसे बड़ा डाका इन्होंने तब डाला जबकि इन तबकों का बहुत बड़ा हिस्सा जागरूक हो चुका है। सरकारी पदों पर उचित भागीदारी से तो ये तबका जरूर वंचित है, लेकिन फिर भी इस तबके में पढ़े-लिखे, जागरूक और प्रबुद्ध लोगों की काफी बडी संख्या हो चुकी है और अन्याय के तमाम मुद्दों पर आवाज उठाने वाले लोग भी बहुत सारे लोग हर जगह दिखने लगे हैं। ऐसी स्थिति में संविधान की मूल भावना को ही नष्ट करने का साहस आरएसएस ने किया है, ये सचमुच हैरानी की बात है। इस दुस्साहस के पीछे कारण शायद यह रहा है कि एससी, एसटी और ओबीसी का बहुत बड़ा हिस्सा अब तक ब्राह्मणी कर्मकांड में उलझा हुआ है, और ये मानकर चलता है कि इनके बिना काम नहीं चल सकता। बहुत सारे बहुजन राष्ट्रवाद की धारणा के बहकावे में आ जाते हैं जबकि यह ठगों की अंतिम शरणस्थली है।

बहुत सारे एससी, एसटी और ओबीसी स्थानीय जरूरत और परिस्थितियों के अनुसार, भाजपा-संघ या कांग्रेस में छोटे-मोटे पदों या टिकटों के लालच में जुड़ जाते हैं, और वाणी की निर्भीकता को गिरवी रख देते हैं, और समाज तथा देश के लिए अनुपयोगी हो जाते हैं। संघ परिवार हमेशा से बहुजन समाज के लोगों

और उनकी मानसिकता पर पैनी निगाह रखता है, और उसी के हिसाब से अपनी रणनीति तय करता है। शायद उसने भांप लिया कि पढ़ा-लिखा एससी-एसटी और ओबीसी का तबका अपने मौजूदा कंफर्ट(?) जोन से बाहर निकलकर कोई ज्यादा विरोध नहीं करेगा और अगर करेगा भी तो वह अपने लोगों से इस कदर कटा हुआ है, कि उसका कोई महत्व नहीं रह जाएगा। यही होता भी दिखा। 13 पॉइंट रोस्टर के मुद्दे पर इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद से ही देश के तमाम विश्वविद्यालयों में छात्रों और प्रोफेसरों के आंदोलन जारी हैं, लेकिन इस मुद्दे पर पूरे देश में जिस तरह की ज्वाला दिखनी चाहिए थी, वह नहीं दिख पा रही है। इसी का नतीजा रहा कि मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इस मामले पर अध्यादेश लाने की जरूरत नहीं समझी।

एजेंडा सेटिंग नहीं कर पाता है बहुजन समाज

वास्तव में तो हमारा बौद्धिक वर्ग भी आत्मविश्वास से इस कदर हीन है कि वह संख्या में बहुत ज्यादा होने पर भी अपने एजेंडे पर काम नहीं कर पाता। आरएसएस के चंद लोग जिन मुद्दों को उछाल देते हैं, हमारे लोग भी उन्हीं में उलझ जाते हैं और उनके ही पक्ष या विपक्ष में लिखकर या बोलकर अपनी ऊर्जा बरबाद करने लगते हैं। हमारी इसी कमजोरी को देखते हुए आरएसएस ने युद्धोन्माद पैदा करने में सफलता उस समय पा ली, जबकि आनुपातिक भागीदारी, उच्च न्यायपालिका में भागीदारी, एससी-एसटी-ओबीसी के लिए भर्तियों पर रोक, जातिगत जनगणना की मांग और आदिवासियों के जंगलों से निष्कासन जैसे प्रभावी मुद्दे उभर रहे थे। वो हर एजेंडे के साथ अपना बनाया एक नायक पेल देते हैं, और हमारे लोग उनकी जय जयकार करने लगते हैं। किस तरह से हमें मंच से दूर रखकर केवल भीड़ बनाकर रखा जाता है, इसका न तो हमें पता चलता है, और न हमें यह सब समझने की जरूरत महसूस होती है।

दुनिया के हर तरह की न्याय प्रणाली का सबसे पहला सिद्धांत होता है, वंचित वर्ग का ख्याल सबसे पहले रखना। सबसे पहले भूखे को ही रोटी दी जाती है, उसके बाद बाकी लोगों का नंबर आता है। यही भारत में ही होना चाहिए। हर संसाधन पर पहला हक शोषितों और वंचितों का होना चाहिए, यानी एसटी, एससी और ओबीसी का सबसे पहले मौका मिलना चाहिए, जो सदियों से अवसरों से भी वंचित हैं, और आबादी में 85 प्रतिशत से भी ज्यादा हैं।

वर्तमान स्थिति इसके विपरीत तो है ही, साथ ही इसे और भी प्रतिकूल बनाया जा रहा है। 13 पॉइंट रोस्टर जो अब विकराल स्वरूप लेकर, विश्वविद्यालयों से आगे

निकलकर, सभी सरकारी विभागों में लागू किया जा रहा है, उसका मूल ही यही है कि सबसे पहला ही नहीं, पहला, दूसरा और तीसरा हक भी उसी चंद लोगों के जातीय समूह को दिया जाना है जो पहले से ही ओवर-रेप्रेजेंटेड हैं। 13 पॉइंट रोस्टर में पहले तीन पद सवर्णों के लिए ही रहेंगे जिसे भले ही जनरल कहा जाए, लेकिन सब जानते हैं कि जनरल के नाम पर होने वाली भर्तियों में केवल ब्राह्मण ही रहते हैं, और नाममात्र के लिए कुछ अन्य राजपूत, वैश्य और कायस्थ रखे जाते हैं। चौथा पद ओबीसी को जाएगा और पांचवां-छठा पद फिर सवर्णों को जाएगा। इस तरह से सर्वाधिक वंचित तबका यानी आदिवासियों को पहले तेरह पदों तक कोई जगह नहीं दी जाएगी।

इसका सीधा सा अर्थ यही है कि आरएसएस चाहता है कि संसाधनों पर सबसे पहला, सबसे ज्यादा और अंततः सारा हक केवल सवर्णों को ही मिले और उसमें भी ब्राह्मणों को ही मौका मिले। यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के बिलकुल विपरीत है। अब चूंकि यह तय हो चुका है कि आरएसएस विपरीत परिस्थितियों में भी केवल ब्राह्मणों के हित का ध्यान रखता है, इसलिए फिलहाल किसी भी तरह के न्याय के लिए भाजपा की सरकार को केंद्र से और अन्य राज्यों से विदा करना ही एकमात्र विकल्प है।आज सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि सारे एससी, एसटी और ओबीसी समुदाय को एक सूत्र में बांधा जाए और इस लायक बनाया जाए कि उनके हितों पर तनिक भी कुठाराघात हो तो सब लोग एक साथ उठ खड़े हों। यह बहुत मुश्किल काम है, और फिलहाल बौद्धिक वर्ग के पास भी इस काम के लिए कोई रोडमैप तैयार नहीं है।

सारी जद्दोजहद केवल उन कुछ दलों को कुछ प्रांतों या कभी-कभी केंद्र में थोडी बहुत भागीदारी दिलाने के प्रयासों तक सीमित रह जाती है जिन्हें सामाजिक न्याय का पक्षधर माना जाता है। हालांकि इनकी इस पक्षधरता पर भी कई तरह के सवाल उठते हैं क्योंकि सरकार में आने पर ये भी केवल या ज्यादातर सवर्णों के हितों की ही सुरक्षा करते हैं, और बहुजन समाज को मान लेते हैं कि ये तो हर हाल में हमारे साथ रहने पर बाध्य हैं ही।

5 मार्च का भारत बंद

तमाम सीमाओं और दिक्कतों के बावजूद, लोकसभा चुनावों से ठीक पहले 5 मार्च को हुए भारत बंद ने उम्मीद की नई किरण जगाई है। इस बंद ने साबित किया कि अगर हमारे नेता खुद पहल नहीं करते तो हमारा समाज खुद पहल करके अपने हक की लड़ाई लड़ेगा। 5 मार्च के बंद का आयोजन किसी राजनीतिक दल ने नहीं

किया। यह समाज के कुछ प्रबुद्ध लोगों का प्रयास था और इसमें बेहद समझदारी से देश के कई सारे संगठनों से जुड़ने की अपील की गई। इसके बाद तमाम राजनीतिक दलों से भी सहयोग मांगा गया और वह सहयोग बहुत अच्छे रूप में मिला भी। मीडिया की कथित मुख्यधारा की अनदेखी के बावजूद, देश के कई राज्यों में बंद का व्यापक असर हुआ और फिर मीडिया भी उसका कवरेज करने पर बाध्य हुआ। वास्तव में तो मीडिया अब भी ये पता लगाने में जुटा हुआ है कि ये भारत बंद किसके दिमाग की उपज थी। सोशल मीडिया ही देश के बहुसंख्यक समाज का असली मीडिया है, यह भी 5 मार्च के भारत बंद से साबित हुआ है। लोगों ने सोशल मीडिया पर बंद का आह्वान करना शुरू किया और देखते ही देखते सैकड़ों हजारों वीडियो अपलोड हो गए। बंद शुरू होते ही, बंद से संबंधित खबरें, तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर आने लगे और उन्हें देख-देखकर लोगों का उत्साह बढ़ता गया।

पठनीय और संग्रहणीय पुस्तक

सवाल कई सारे हैं और इन पर मिलकर विचार करने की जरूरत है। बहुजन डाइवर्सिटी मिशन के संस्थापक-अध्यक्ष एच एल दुसाध जी तथा डॉ. कौलेश्वर 'प्रियदर्शी' के संपादन में तैयार हुई इस पुस्तक में स्वयं दुसाध जी ने और अन्य अनेक प्रबुद्ध विचारकों ने एससी, एसटी और ओबीसी के सामने मौजूद वर्तमान संकट की भयावहता पर गंभीर विचार-विमर्श किया है। तमाम लोगों ने अलग-अलग नजरिए से इस संकट को देखा है और इसके समाधान भी सुझाए हैं। इस प्रकार से ये पुस्तक एक बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित होने जा रही है। बहुसंख्यक आबादी के नजरिए से देश को देखने-समझने में यह पुस्तक काफी मदद करती है। पिछले पांच-दस सालों के घटनाक्रमों का तो इसमें बहुत ही बारीकी और सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है। मुझे लगता है कि यह पुस्तक देश और समाज के प्रति कर्तव्यबोध रखने वाले हर शिक्षित व्यक्ति के लिए पठनीय भी है और संग्रहणीय भी। एक बात और यदि बहुजनवादी दल वर्तमान सरकार को उखाड़ फेंकने के प्रति गंभीर हैं तो यह किताब उनके लिए एक मारक हथियार साबित हो सकती है। मैं इसमें लेख लिखने वाले और अन्य किसी भी तरह का योगदान देने वाले विद्वानों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

लेखक प्राख्यात पत्रकार और कई कालजयी किताबों के अनुवादक हैं

email : mnsyadav@gmail.com

शुभकामना सन्देश

वंचितों की मुक्ति का अचूक नुस्खा!

–डॉ. सी.पी. आर्य

आज की तारीख में 'डाइवर्सिटी मैन ऑफ़ इंडिया' के रूप में विख्यात एच.एल. दुसाध बहुजन समाज के संभवतः सबसे बड़े लेखक हैं, जिन पर इस वर्ग के पढ़े-लिखे लोगों को अपार गर्व है। दुसाध साहब से मैं लम्बे समय से फेसबुक पर जुड़ा रहा और उनकी टिप्पणियों को पढ़कर औरों की तरह मैं भी उनका मुरीद बन गया। फेसबुक पर इन्हें पढ़ते हुए मेरे मन में इनसे मिलने की चाह बहुत पहले पैदा हो गयी और मैंने कुछेक दफे मिलने का प्रयास भी किया, लेकिन मुलाकात नहीं हो पायी। संयोग से उन्होंने पिछले नवम्बर में अपने संगठन 'बहुजन डाइवर्सिटी मिशन' की ओर से मेरे ही शहर मऊ में ही 'डाइवर्सिटी डे' का आयोजन किया। इस सिलसिले में किसी से नंबर पाकर उन्होंने खुद ही मुझसे संपर्क किया और आयोजन को सफल बनाने में मेरे सहयोग की इच्छा जताई। यह मेरे लिये बहुत गौरव की बात थी और जितना हो सका मैंने इस आयोजन को सफल बनाने के लिये किया भी।

बहरहाल इस आयोजन के सिलसिले में वह मेरे ही आवास पर तीन ठहरे, साथ में उनकी जीवन संगिनी भी रहीं। इन तीन दिनों में 67 साल के यंग ओल्ड मैन दुसाध की युवाओं जैसी ऊर्जा और समाज के प्रति बेइंतहा डेडिकेशन देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। उस मुलाकात के कुछ अन्तराल बाद एक बार फिर मेरे आवास पर आये। तब तक मैं उनकी कुछ किताबें पढ़ चुका था। उन्हें पढ़कर लगा था उनकी किताबें अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचनी चाहिए। ऐसा कैसे हो, दूसरी मुलकात में हमने खास तौर से इसी प्लान पर चर्चा किया। दुसाध साहब अपने

संगठन बहुजन डाइवर्सिटी मिशन की ओर से साल में दो बड़े आयोजन जरूर करते हैं। एक 'डाइवर्सिटी डे' और दूसरा बीडीएम का 'स्थापना दिवस' जो 15 मार्च को पड़ता है। और ऐसे अवसरों पर हर बार ही कुछ नया डाइवर्सिटी साहित्य रिलीज करते हैं। इस बार स्थापना दिवस पर वह इस किताब को ला रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने मुझे शुभकामना सन्देश देने को कहा, जो मेरे लिए बहुत गौरव का विषय था। बहरहाल मैंने उनका अनुरोध तो स्वीकार कर लिया पर, इस किताब की सफलता की कामना करने से ज्यादा, उनकी इस किताब के विषय में मेरे जैसा व्यक्ति क्या लिख ही सकता है!

बहरहाल शुभकामना के दो शब्द लिखने के लिए मैंने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर डॉ. कौलेश्वर 'प्रियदर्शी' और डॉ. अनीता भारती द्वारा लिखी 'एच.एल. दुसाध : डाइवर्सिटी मैन ऑफ़ इंडिया' नामक किताब का सहारा लेने का मन बनाया। इस शोधपूर्ण पुस्तक के एक अध्याय में दुसाध साहब के लेखन पर कुछ विद्वानों की राय है, जिससे पता चलता है कि उनको चाहने वाले कुछ विद्वान उन्हें मिनी आंबेडकर तो कुछ आधुनिक भारत का मार्क्स कहते हैं। (एच.एल. दुसाध : डाइवर्सिटी मैन ऑफ़ इंडिया, पृष्ठ-78)। एक विद्वान ने लिखा है, 'आज बहुजन मूव्हमेंट को गति देने में 50 प्रतिशत योगदान अकेले दुसाध का है। मंचों से घंटों बोलने वालों के मुंह से भागीदारी की हिमायत करने वाले शब्द मुख्यतः दुसाध के ही होते हैं चाहे, वो इसे न स्वीकार करें' (वही, पृष्ठ-78)। दुसाध साहब मुख्यतः पत्रकारीय विधा में लिखते हैं। अखबारों के सम्पादकीय पृष्ठ पर बहुजनों की ओर से छपने प्रायः 50 प्रतिशत लेख इनके ही होते हैं। यह पुस्तक मुख्यतः 12 जनवरी से 7 मार्च, 2019 तक 'सवर्ण और विभागवार आरक्षण' पर लिखे गए उनके डेढ़ दर्जन बड़े-बड़े लेखों से तैयार हुई है। ये सारे लेख अख़बारों और सोशल मीडिया पर आ चुके हैं, जिन्हें पाठकों ने बेहद सराहा है। उनकी पत्रकारिता पर जेएनयू के एक मशहूर प्रोफ़ेसर ने लिखा है, 'दुसाध की पत्रकारिता का दायरा आश्चर्यचकित करने वाला है। यह दायरा इतना बड़ा है कि इसमें विभिन्न दलों की राजनीति, साहित्य के प्रश्न, फिल्म, क्रिकेट, ओलम्पिक, टीवी, शिक्षानीति, धर्म से जुड़ी घटनायें, भू-मंडलीकरण और अर्थनीति सभी कुछ आ जाता है। दुसाध की पत्रकारिता में जो व्यापक दायरा है, अनगिनत विषय हैं, उन पर लिखने लायक ज्ञान और योग्यता है, पैनी दृष्टि और ताजगी है-वह स्वागत योग्य है। इसने हिंदी पत्रकारिता में एक नया अध्याय जोड़ दिया है' (वही, पृष्ठ-73)। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए जेएनयू के ही एक और प्राख्यात प्रोफ़ेसर ने लिखा है, 'वैसे दुसाध की नवीन परिकल्पनाओं,

संरचनाओं तथा वस्तुनिष्ठ आंकलन को किताब की भूमिका में समेटना संभव नहीं है। क्योंकि एक स्वतंत्र पत्रकार के रूप में उनके लेखों के मुद्दों का क्षितिज इतना व्यापक है कि औसत दर्जे के बुद्धिजीवी द्वारा उसका विश्लेषण संभव है ही नहीं। दुसाध के ज्ञान-विज्ञान का कैनवस यूपी से लेकर यू.एस.ए. तक है। छोटी-से छोटी गाँव की जानकारी से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अश्वेतों का फिल्मों में योगदान या आर्थिक जगत में 'डाइवर्सिटी प्रिंसिपल' सभी पर उनका समान अधिकार है। उनके सूक्ष्मतम तथा उच्चतम स्तर के ज्ञान को पढ़कर पाठक यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि वह पत्रकार हैं या किसी विश्वविद्यालय का प्रोफ़ेसर' (वही, पृष्ठ-75)।

'सवर्ण और विभागवार आरक्षण : वर्ग संघर्ष के इतिहास में बहुजनों पर सबसे बड़ा हमला!' किताब को कई बार पढ़ने के बाद मुझे लगता है दुसाध साहब के लेखन और चिंतन पर विद्वानों की उपरोक्त राय में जरा भी अतिश्योक्ति नहीं है, बल्कि मैं तो कहूँगा इस पुस्तक में वह अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में सामने आये हैं। मैं पेशे से एक डॉक्टर हूँ और डॉक्टर के नजरिये से इस किताब को देखने के बाद मैं दावे से कह सकता हूँ वह भारतीय समाज के सबसे बड़े चिकित्सक हैं। उन्होंने देश और समाज की वर्तमान बीमारी की पड़ताल करते हुए इस पुस्तक में जो परफेक्ट नुस्खा सुझाया है, उस पर अमल करने पर बहुजन समाज सचमुच में आजाद तथा देश सबल और समृद्ध हो जायेगा, ऐसा मेरा मानना है। यह एक ऐसी विरल पुस्तक है, जिसकी उपयोगिता तब तक बनी रहेगी, जब तक इस देश में आर्थिक और सामाजिक विषमता के खात्मे का संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर का सपना पूरा नहीं हो जाता। मैं ऐसी बेजोड़ पुस्तक के लिए दुसाध साहेब को बहुत-बहुत साधुवाद देते हुए कामना करता हूँ कि यह लाखों की संख्या में पाठकों तक पहुंचे। अंत में एक खास संदेश बहुजनवादी दलों के लिए! यह किताब ऐसे समय में आई है जब चुनाव की घोषणा हो चुकी है। इस अवसर पर मैं सामाजिक न्यायवादी दलों को यह बताना चाहूँगा कि करो या मरो के इस चुनाव में उनके लिए यह किताब सबसे कारगर हथियार बन सकती है। यदि वे इसे पढ़कर अपनी स्ट्रैटजी तय करें तो उनकी राह काफी आसान हो जाएगी। इसमें सवर्णवादी दलों की काट के सारे सूत्र लिपिबद्ध किये गये हैं। जरूरत बस इस किताब को हथियार बनाने की है।

चिकित्साधिकारी, मऊ, उप्र
संपर्क : 9415844253

Continue Your Reading Journey

This preview has ended. Access the complete library and support our mission.

Join Our Inclusive Reading Community

✓ We champion diverse voices and perspectives

✓ Your support helps amplify underrepresented authors

✓ We provide free access to educational institutions

✓ Building bridges through shared stories

✓ Creating space for all narratives to be heard

Support Our Mission

Your donation enables us to:

• Curate diverse book collections

• Support authors from marginalized communities

• Provide free resources to educators

• Maintain our accessible digital library

Visit: www.diversitymission.in

Sign the diversity pledge • Make a donation • Download full library